

समय की पुकार - दाता बनो

आज सर्व श्रेष्ठ भाग्य विधाता, सर्व शक्तियों के दाता बापदादा चारों ओर के सर्व बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। चाहे मधुबन में सम्मुख में हैं, चाहे देश विदेश में याद में सुन रहे हैं, देख रहे हैं, जहाँ भी बैठे हैं लेकिन दिल से सम्मुख हैं। उन सब बच्चों को देख बापदादा हर्षित हो रहे हैं। आप सभी भी हर्षित हो रहे हो ना! बच्चे भी हर्षित और बापदादा भी हर्षित। और यही दिल का सदा का सच्चा हर्ष सारी दुनिया के दुःखों को दूर करने वाला है। यह दिल का हर्ष आत्माओं को बाप का अनुभव कराने वाला है क्योंकि बाप भी सदा सर्व आत्माओं के प्रति सेवाधारी है और आप सब बच्चे बाप के साथ सेवा-साथी हैं। साथी हैं ना! बाप के साथी और विश्व के दुःखों को परिवर्तन कर सदा खुश रहने का साधन देने की सेवा में सदा उपस्थित रहते हो। सदा सेवाधारी हो। सेवा सिर्फ चार घण्टा, छः घण्टा करने वाले नहीं हो। हर सेकण्ड सेवा की स्टेज पर पार्ट बजाने वाले परमात्म-साथी हो। याद निरन्तर है, ऐसे ही सेवा भी निरन्तर है। अपने को निरन्तर सेवाधारी अनुभव करते हो? या ८-१० घण्टे के सेवाधारी हैं? यह ब्राह्मण जन्म ही याद और सेवा के लिए है। और कुछ करना है क्या? यही है ना! हर श्वास, हर सेकण्ड याद और सेवा साथ-साथ है या सेवा के घण्टे अलग हैं और याद के घण्टे अलग हैं? नहीं है ना! अच्छा, बैलेन्स है? अगर १०० परसेन्ट सेवा है तो १०० परसेन्ट ही याद है? दोनों का बैलेन्स है? अन्तर पड़ जाता है ना? कर्म योगी का अर्थ ही है - कर्म और याद, सेवा और याद - दोनों का बैलेन्स समान, समान होना चाहिए। ऐसे नहीं कोई समय याद ज़्यादा है और सेवा कम, या सेवा ज़्यादा है याद कम। जैसे आत्मा और शरीर जब तक स्टेज पर है तो साथ-साथ है ना। अलग हो सकते हैं? ऐसे याद और सेवा साथ-साथ रहे। याद अर्थात् बाप समान, स्व के स्वमान की भी याद। जब बाप की याद रहती है तो स्वतः ही स्वमान की भी याद रहती है। अगर स्वमान में नहीं रहते तो याद भी पावरफुल नहीं रहती।

स्वमान अर्थात् बाप समान। सम्पूर्ण स्वमान है ही बाप-समान। और ऐसे याद में रहने वाले बच्चे सदा ही दाता होंगे, लेवता नहीं। देवता माना देने वाला। तो आज बापदादा सभी बच्चों के दातापन की स्टेज चेक कर रहे थे कि कहाँ तक दाता के बच्चे दाता बने हैं? जैसे बाप कभी भी लेने का संकल्प नहीं कर सकता, देने का करता है। अगर कहते भी हैं, सब कुछ पुराना दे दो तो भी पुराने के बदले नया देता है। लेना माना बाप का देना। तो वर्तमान समय बापदादा को बच्चों की एक टॉपिक बहुत अच्छी लगी। कौन सी टॉपिक? विदेश की टॉपिक है। कौन सी? (काल आफ टाइम।)

तो बापदादा देख रहे थे कि बच्चों के लिए समय की क्या पुकार है! आप देखते हो विश्व के लिए, सेवा के लिए, बापदादा सेवा के साथी तो हैं ही। लेकिन बापदादा देखते हैं कि बच्चों के लिए अभी समय की क्या पुकार है? आप भी समझते हो ना कि समय की क्या पुकार है? अपने लिए सोचो। सेवा प्रति तो भाषण किये, कर रहे हैं ना! लेकिन अपने लिए, अपने से ही पूछो कि हमारे लिए समय की क्या पुकार है? वर्तमान समय की क्या पुकार है? तो बापदादा देख रहे थे कि अभी के समय अनुसार हर समय, हर बच्चे को 'दातापन' की स्मृति और बढ़ानी है। चाहे स्व-उन्नति के प्रति दाता-पन का भाव, चाहे सर्व के प्रति स्नेह इमर्ज रूप में दिखाई दे। कोई कैसा भी हो, क्या भी हो, मुझे देना है। तो दाता सदा ही बेहद की वृत्ति वाला होगा, हद नहीं और दाता सदा सम्पन्न, भरपूर होगा। दाता सदा ही क्षमा का मास्टर सागर होगा। इस कारण जो हद के अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार वह इमर्ज नहीं होंगे, मर्ज होंगे। मुझे देना है। कोई दे, नहीं दे लेकिन मुझे दाता बनना है। किसी भी संस्कार के वश परवश आत्मा हो, उस आत्मा को मुझे सहयोग देना है। तो किसी का भी हद का संस्कार आपको प्रभावित नहीं करेगा। कोई मान दे, कोई नहीं दे, वह नहीं दे लेकिन मुझे देना है। ऐसे दातापन अभी इमर्ज चाहिए। मन में भावना तो है लेकिन..... लेकिन नहीं आवे। मुझे करना ही है। कोई ऐसी चलन वा बोल जो आपके काम का नहीं

है, अच्छा नहीं लगता है, उसे लो ही नहीं। बुरी चीज़ ली जाती है क्या? मन में धारण करना अर्थात् लेना। दिमाग तक भी नहीं। दिमाग में भी बात आ गई ना, वह भी नहीं। जब है ही बुरी चीज़, अच्छी है नहीं तो दिमाग और दिल में लो नहीं यानी धारण नहीं करो। और ही लेने के बजाए शुभ भावना, शुभ कामना, दाता बन दो। लो नहीं; क्योंकि अभी समय के अनुसार अगर दिल और दिमाग खाली नहीं होगा तो निरन्तर सेवाधारी नहीं बन सकेंगे। दिल या दिमाग जब किसी भी बातों में बिजी हो गया तो सेवा क्या करेंगे? फिर जैसे लौकिक में कोई ^{ES} घण्टा, कोई ND घण्टा वर्क करते हैं, ऐसे यहाँ भी हो जायेगा। ^{ES} घण्टे के सेवाधारी, ^E घण्टे के सेवाधारी। निरन्तर सेवाधारी नहीं बन सकेंगे। चाहे मन्सा सेवा करो, चाहे वाणी से, चाहे कर्म अर्थात् सम्बन्ध, सम्पर्क से। हर सेकण्ड दाता अर्थात् सेवाधारी। दिमाग को खाली रखने से बाप की सेवा के साथी बन सकेंगे। दिल को सदा साफ रखने से निरन्तर बाप की सेवा के साथी बन सकते हैं। आप सबका वायदा क्या है? साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। वायदा है ना? या आप आगे रहो हम पीछे-पीछे आयेंगे? नहीं ना? साथ का वायदा है ना? तो बाप सेवा के बिना रहता है? याद के बिना भी नहीं रहता। जितना बाप याद में रहता उतना आप मेहनत से रहते हैं। रहते हैं लेकिन मेहनत से, अटेन्शन से। और बाप के लिए है ही क्या? परम आत्मा के लिए हैं ही आत्मायें। नम्बरवार आत्मायें तो हैं ही। सिवाए बच्चों की याद के बाप रह ही नहीं सकता। बाप बच्चों की याद के बिना रह सकता है? आप रह सकते हो? कभी-कभी नटखट हो जाते हैं।

तो क्या सुना? समय की पुकार है - दाता बनो। आवश्यकता है बहुत। सारे विश्व के आत्माओं की पुकार है - हे हमारे इष्ट.....इष्ट तो हो ना! किसी न किसी रूप में सर्व आत्माओं के लिए इष्ट हो। तो अभी सभी आत्माओं की पुकार है - हे इष्ट देव-देवियाँ परिवर्तन करो। यह पुकार सुनने में आती है? पाण्डवों को यह पुकार सुनने में आती है? सुनकर फिर क्या करते हो? सुनने में आती है तो सैलवेशन देते हो या सोचते हो, हाँ करेंगे? पुकार सुनने

में आती है? तो समय की पुकार सुनाते हो और आत्माओं की पुकार सिर्फ सुनते हो? तो इष्ट देव-देवियों अभी अपने दाता-पन का रूप इमर्ज करो। देना है। कोई भी आत्मा वंचित नहीं रह जाए। नहीं तो उल्हनों की मालायें पड़ेंगी। उल्हनें तो देंगे ना! तो उल्हनों की माला पहनने वाले इष्ट हो या फूलों की माला पहनने वाले इष्ट हो? कौन से इष्ट हो? पूज्य हो ना! ऐसे नहीं समझना कि हम तो पीछे आने वाले हैं। जो बड़े-बड़े हैं वही दाता बनेंगे, हम कहाँ बनेंगे। लेकिन नहीं, सबको दाता बनना है।

जो फ़र्स्ट टाइम मधुबन में आने वाले हैं वह हाथ उठाओ। जो फ़र्स्ट टाइम आये हैं वह दाता बन सकते हैं या दूसरे तीसरे साल में दाता बनेंगे? एक साल वाले दाता बन सकते हैं? (हाँ जी) बहुत अच्छे होशियार हैं। बापदादा हिम्मत के ऊपर सदा खुश होते हैं। चाहे एक मास वाला भी है, यह तो एक साल या ६ मास हुआ होगा लेकिन बापदादा जानते हैं कि एक साल वाले हों या एक मास वाले हों, एक मास में भी अपने को ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी कहलाते हैं ना! तो ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के वर्से के अधिकारी बन गये। ब्रह्मा को बाप माना तब तो कुमार-कुमारी बने ना? तो ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी, बाप ब्रह्मा, शिव बाप के वर्से के अधिकारी बने ना! या एक मास वालों को वर्सा नहीं मिलेगा? एक मास वालों को वर्सा मिलता है? जब वर्सा मिल गया तो देने के लिए दाता तो होंगे ना! जो चीज़ मिलती है वह देना तो शुरू करना ही चाहिए ना।

अगर बाप समझकर कनेक्शन जोड़ा तो एक दिन में भी वर्सा ले सकता है। ऐसे नहीं कि हाँ अच्छा है, कोई शक्ति है, समझ में तो आता है...यह नहीं। वर्से के अधिकारी बच्चे होते हैं। समझने वाले, देखने वाले नहीं। अगर एक दिन में भी दिल से बाप माना तो वर्से का अधिकारी बन सकता है। आप लोग तो सभी अधिकारी हैं ना? आप लोग तो ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं ना या बन रहे हैं? बन गये हैं या बनने आये हैं? कोई आपको बदल नहीं सकता? ब्रह्माकुमार-कुमारी के बजाए सिर्फ कुमार-कुमारी बन जाओ,

नहीं हो सकता? ब्रह्माकुमार और कुमारी बनने में फायदे कितने हैं? एक जन्म के भी फायदे नहीं, अनेक जन्मों के फायदे। पुरुषार्थ आधा जन्म, चौथाई जन्म का और प्रालम्ब है अनेक जन्मों की। फायदा ही फायदा है ना!

बापदादा समय के अनुसार वर्तमान समय विशेष एक बात अटेन्शन में दिलाते हैं क्योंकि बापदादा बच्चों की रिज़ल्ट तो देखते रहते हैं ना! तो रिज़ल्ट में देखा गया, हिम्मत बहुत अच्छी है। लक्ष्य भी बहुत अच्छा है। लक्ष्य अनुसार अभी तक लक्ष्य और लक्षण उसमें अन्तर है। लक्ष्य सबका नम्बरवन है, कोई से भी बापदादा पूछेंगे आपका लक्ष्य ७० जन्म का राज्य भाग्य लेना है, सूर्यवंशी बनने का है वा चन्द्रवंशी? तो सब किसमें हाथ उठायेंगे? सूर्यवंशी में ना! कोई है जो चन्द्रवंशी बनना चाहता है? कोई राम बनने वाला है? कोई नहीं। एक तो बन जाओ। कोई तो राम बनना ही है ना। (एक ने हाथ उठाया) अच्छा है, नहीं तो राम की सीट खाली रह जायेगी। तो लक्ष्य सभी का बहुत अच्छा है, लक्ष्य और लक्षण की समानता - उस पर अटेन्शन देना जरूरी है। उसका कारण क्या है? जो आज सुनाया कभी कभी लेवता बन जाते हैं। यह हो, यह करे, यह मदद दे, यह बदले तो मैं बदलूं। यह बात ठीक हो तो मैं ठीक हूँ। यह लेवता बनना है। दातापन नहीं है। कोई दे या न दे, बाप ने तो सब कुछ दे दिया है। क्या बाप ने किसको थोड़ा दिया है किसको ज़्यादा दिया है? एक ही कोर्स है ना! चाहे ६० साल वाले हो, चाहे एक मास वाले हो, कोर्स तो एक ही है या ६० साल वाले का कोर्स अलग है एक मास वालों का अलग है? उन्होंने ने भी वही कोर्स किया और अभी भी वही कोर्स है। वही ज्ञान है, वही प्यार है, वही सर्व शक्तियां हैं। सब एक जैसा है। उसको १६ शक्तियां, उसको २५ शक्तियाँ नहीं है। सबको एक जैसा वर्सा है। तो जब बाप ने सभी को भरपूर कर दिया तो फिर भरपूर आत्मा दाता बनती है, लेने वाली नहीं। मुझे देना है। कोई दे न दे, लेने के इच्छुक नहीं, देने के इच्छुक। और जितना देंगे, दाता बनेंगे उतना खज़ाना बढ़ता जायेगा। मानों किसको आपने स्वमान दिया, तो दूसरे को देना अर्थात् अपना स्वमान बढ़ाना। देना नहीं होता

है लेकिन देना अर्थात् लेना। लो नहीं, दो तो लेना हो ही जायेगा। तो समझा - समय की पुकार क्या है? दाता बनो। एक अक्षर याद रखना। कोई भी बात हो जाए “दाता” शब्द सदा याद रखना। इच्छा-मात्रम्-अविद्या। न सूक्ष्म लेने की इच्छा, न स्थूल लेने की इच्छा। दाता का अर्थ ही है इच्छा-मात्रम्-अविद्या। सम्पन्न। कोई अप्राप्ति अनुभव नहीं होगी जिसको लेने की इच्छा हो। सर्व प्राप्ति सम्पन्न। तो लक्ष्य क्या है? सम्पन्न बनने का है ना? या जितना मिले उतना अच्छा? सम्पन्न बनना ही सम्पूर्ण बनना है।

आज विदेशियों को खास चांस मिला है। अच्छा है। पहला चांस विदेशियों ने लिया है, लाडले हो गये ना। सभी को मना किया है और विदेशियों को निमन्त्रण दिया है। बापदादा को भी याद तो सभी बच्चे हैं फिर भी डबल विदेशियों को देख, उन्हीं की हिम्मत देख बहुत खुशी होती है। अभी वर्तमान समय इतनी हलचल में नहीं आते हैं। अभी फ़र्क आ गया है। शुरू-शुरू के क्वेश्चन जो होते थे ना - इन्डियन क्लचर है, फ़ारेन कल्चर है.... अभी समझ में आ गया। अभी ब्राह्मण क्लचर में आ गये। न इन्डियन क्लचर, न फ़ारेन कल्चर, ब्राह्मण कल्चर में आ गये। इन्डियन कल्चर थोड़ा खिटखिट करता है लेकिन ब्राह्मण कल्चर सहज है ना! ब्राह्मण कल्चर है ही स्वमान में रहो और स्व-राज्य अधिकारी बनो। यही ब्राह्मण कल्चर है। यह तो पसन्द है ना? अभी क्वेश्चन तो नहीं है ना, इन्डियन कल्चर कैसे आये, मुश्किल है? सहज हो गया ना? देखना फिर वहाँ जाकर कहो थोड़ा यह मुश्किल है! वहाँ जाकर ऐसे नहीं लिखना। सहज कह तो दिया लेकिन यह थोड़ा मुश्किल है! सहज है या थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है? ज़रा भी मुश्किल नहीं है। बहुत सहज है। अभी सारे खेल पूरे हो गये हैं इसलिए हंसी आती है। अभी पक्के हो गये हैं। बचपन के खेल अभी समाप्त हो गये हैं। अभी अनुभवी बन गये हैं और बापदादा देखते हैं कि जितने पुराने पक्के होते जाते हैं ना तो जो नये-नये आते हैं वह भी पक्के हो जाते हैं। अच्छा है, एक-दो को अच्छा आगे बढ़ाते रहते हैं। मेहनत अच्छी करते हैं। अभी दादियों के पास किस्से तो नहीं ले जाते

हैं ना। किस्से-कहानियां दादियों के पास ले जाते हैं? कम हो गये हैं! फर्क है ना? (दादी जानकी से) तो आप अभी बीमार नहीं होना? किस्से-कहानियों में बीमार होते, वह तो खत्म हो गये। अच्छे हैं, सबमें अच्छे ते अच्छा विशेष गुण है - दिल की सफाई अच्छी है। अन्दर नहीं रखते, बाहर निकाल लेंगे। जो बात होगी सच्ची बोल देंगे। ऐसा नहीं, वैसा। ऐसा वैसा नहीं करते, जो बात है वह बोल देते, यह विशेषता अच्छी है। इसीलिए बाप कहते हैं सच्ची और साफ़ दिल पर बाप राज़ी होता है। हाँ तो हाँ, ना तो ना। ऐसे नहीं - देखेंगे...! मज़बूरी से नहीं चलते। चलते हैं तो पूरा, ना तो ना। अच्छा।

बापदादा ने फ़ारेन या इन्डिया, देश-विदेश दोनों की मीटिंग देखी। बहुत मीटिंग की है ना! बापदादा खुश होते हैं कि समय निकाल कर सभी ने जो प्लैन बनाये, मेहनत अच्छी की है, और संगठन भी अच्छा किया है। संगठन से जो भी कार्य होता है वह सहज सफल होता है। तो डबल फ़ारेनर्स ने मीटिंग में संगठन की शक्ति का बहुत अच्छा प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाया। जो भी प्लैन्स बनाये हैं, सबके हिम्मत और मेहनत पर बापदादा खुश है। आर.सी.ओ. ग्रुप, जो विशेष सेवा के लिए आये हैं, तो सभी जो भी आर.सी.ओ. वाले हैं, (पाँचों खण्डों की सेवा के निमित्त मुख्य भाई-बहनें) सभी को बापदादा मुबारक देते हैं। अच्छे-अच्छे प्लैन बनाये हैं। जहाँ जैसे चल सकता है, जितना चल सकता है उतना चलाओ, बड़े शहर और छोटे शहर में फ़र्क तो होता ही है। तो जितनी भी हिम्मत हो, उतना जो समय दिया है मेहनत की है, उन सबको प्रैक्टिकल में लाना। सिर्फ़ एक बात याद रखना कि सेवा और स्व-उन्नति के बैलेन्स में अन्तर नहीं आवे। प्लैन प्रैक्टिकल करने के बाद यह नहीं कहना कि सर्विस में बिजी हो गये ना इसलिए स्व-उन्नति में अन्तर आ गया - यह नहीं कहना। दोनों का बैलेन्स सदा रखना। क्यों? दूसरों की सेवा करो और स्व की सेवा नहीं तो यह अच्छा नहीं। दोनों का बैलेन्स रखना ही सफलता है। समझा। अच्छा।

जो आर.सी.ओ. के आये हैं वह हाथ उठाओ। इण्टरनेशनल सर्विस ग्रुप

भी हाथ उठाओ। अच्छा। मुबारक हो। समय निकालकर भट्टी में भी बैठे, यह अच्छा है। मधुबन में चांस भी अच्छा है। सब मिल भी जाते हैं एक-दो को। सब तरफ़ का समाचार भी सभी को मिल जाता है। तो बापदादा मुबारक दे रहे हैं। बहुत अच्छा किया। अच्छा, और सभी जो भी जहाँ से आये हैं, उन सभी को भी बापदादा स्नेह भरी मुबारक दे रहे हैं। और समाचार भी मिला कि सभी ने, पत्र याद-प्यार बहुत भेजे हैं। तो बापदादा तो पत्र पहुँचने के पहले ही यादप्यार दे रहे हैं। जब आप बच्चे लिखते हैं ना, संकल्प करते हैं तो जैसे यहाँ साइंस के साधन हैं ना, उसमें जल्दी से पहुँच जाता है, पत्र पीछे पहुँचता है, सबसे फास्ट ई-मेल पहुँचता है। तो ई-मेल देना शुरू करते हो ना, उससे पहले बाप के पास पहुँच जाता है। यह सब साधन आप बच्चों की सेवा के सहयोग के लिए निकले हैं। ब्रह्मा बाप जब समाचार सुनते हैं - यह ई-मेल है, ये यह है, तो खुश होते हैं कि वाह बच्चे, वाह! इतना सहज साधन ब्रह्मा बाप को भी साकार में नहीं मिला लेकिन बच्चों के पास हैं। खुश होते हैं। सिर्फ़ सेवा का साधन समझकर यूज़ करना। सेवा के लिए साधन है क्योंकि विश्व-कल्याण करना है तो यह भी साधन सहयोग देते हैं। साधनों के वश नहीं होना। लेकिन साधन को सेवा में यूज़ करना। यह बीच का समय है जिसमें साधन मिले हैं। आदि में भी कोई इतने साधन नहीं थे और अन्त में भी नहीं रहेंगे। यह अभी के लिए हैं। सेवा बढ़ाने के लिए हैं। लेकिन यह साधन हैं, साधना करने वाले आप हो। साधन के पीछे साधना कम नहीं हो। बाकी बापदादा खुश होते हैं। बच्चों की सीन भी देखते हैं। फटाफट काम कर रहे हैं। बापदादा आपके आफ़िस का भी चक्कर लगाते हैं। कैसे काम कर रहे हैं। बहुत बिज़ी रहते हैं ना! अच्छी तरह से आफ़िस चलती है ना! जैसे एक सेकण्ड में साधन यूज़ करते हो ऐसे ही बीच-बीच में कुछ समय साधना के लिए भी निकालो। सेकण्ड भी निकालो। अभी साधन पर हाथ है और अभी अभी एक सेकण्ड साधना, बीच-बीच में अभ्यास करो। जैसे साधनों में जितनी प्रैक्टिस करते हो तो ऑटोमेटिक चलता रहता है ना। ऐसे एक

सेकण्ड में साधना का भी अभ्यास हो। ऐसे नहीं टाइम नहीं मिला, सारा दिन बहुत बिजी रहे। बापदादा यह बात नहीं मानते हैं। क्या एक घण्टा साधन को अपनाया, उसके बीच में क्या ३१-६ सेकण्ड नहीं निकाल सकते? ऐसा कोई बिज़ी है जो ३१ मिनट भी नहीं निकाल सके, ३१ सेकण्ड भी नहीं निकाल सके। ऐसा कोई है? निकाल सकते हैं तो निकालो।

बापदादा जब सुनते हैं आज बहुत बिज़ी हैं, बहुत बिज़ी कह करके शकल भी बिज़ी कर देते हैं। बापदादा मानते नहीं हैं। जो चाहे वह कर सकते हो। अटेन्शन कम है। जैसे वह अटेन्शन रखते हो ना - १०० मिनट में यह लेटर पूरा करना है, इसीलिए बिज़ी होते हो ना - टाइम के कारण। ऐसे ही सोचो १०० मिनट में यह काम करना है, वह भी तो टाइम-टेबल बनाते हो ना। इसमें एक दो मिनट पहले से ही एड कर दो। ९९ मिनट लगना है, ६ मिनट नहीं, ९९ मिनट लगना है तो ९ मिनट साधना में लगाओ। यह हो सकता है?

(अमेरिका की गायत्री से पूछते हैं) तो अभी कभी नहीं कहना, बहुत बिजी, बहुत बिजी। बापदादा उस समय चेहरा भी देखते हैं, फोटो निकालने वाला होता है। कितना भी बिजी हो, लेकिन पहले से ही साधन के साथ साधना का समय एड करो। होता क्या है - सेवा तो बहुत अच्छी करते हो, समय भी लगाते हो, उसकी तो मुबारक है। लेकिन स्व-उन्नति या साधना बीच-बीच में न करने से थकावट का प्रभाव पड़ता है। बुद्धि भी थकती है, हाथ पांव भी थकता है और बीच-बीच में अगर साधना का समय निकालो तो जो थकावट है ना, वह दूर हो जाए। खुशी होती है ना। खुशी में कभी थकावट नहीं होती है। काम में लग जाते हो, बापदादा तो कहते हैं कि काफी समय एक्शन-कान्सेस रहते हो। ऐसे होता है ना? एक्शन-कान्सेस की मार्क्स तो मिलती हैं, वेस्ट तो नहीं जाता है लेकिन सोल-कान्सेस की मार्क और एक्शन कान्सेस की मार्क में अन्तर तो होगा ना। फ़र्क होता है ना? तो अभी बैलेन्स रखो। लिंक को तोड़ो नहीं, जोड़ते रहो क्योंकि मैजारिटी डबल विदेशी काम करने में भी डबल बिज़ी रहते हैं। बापदादा जानते हैं कि मेहनत

बहुत करते हैं लेकिन बैलेन्स रखो। जितना समय निकाल सको, सेकण्ड निकालो, मिनट निकालो, निकालो जरूर। हो सकता है? पाण्डव हो सकता है? टीचर्स हो सकता है? और जो आफ़िस में काम करते हैं, उनका हो सकता है? हाँ, तो बहुत अच्छा करते हैं। अच्छा।

भारत वालों ने भी जो प्लैन्स बनाये हैं वह भी अच्छे प्लैन्स बनाये हैं। दोनों के अपने-अपने वायुमण्डल अनुसार प्लैन्स अच्छे हैं।

जिन बच्चों ने यादप्यार भेजी है, बापदादा उन सभी बच्चों को, जिन्होंने पत्र द्वारा या किसी भी द्वारा याद प्यार भेजा बापदादा को स्वीकार हुआ। और बापदादा रिटर्न में सभी बच्चों को 'दातापन का वरदान' दे रहे हैं। अच्छा – एक सेकण्ड में उड़ सकते हो? पंख पावरफुल है ना? बस, बाबा कहा और उड़ा। (ड्रिल)

चारों ओर के सर्व श्रेष्ठ बाप समान दातापन की भावना रखने वाले, श्रेष्ठ आत्माओं को, निरन्तर याद और सेवा में तत्पर रहने वाले, परमात्म-सेवा के साथी बच्चों को, सदा लक्ष्य और लक्षण को समान बनाने वाले, सदा बाप के स्नेही और समान, समीप बनने वाले, बापदादा के नयनों के तारे, सदा विश्व-कल्याण की भावना में रहने वाले रहमदिल, मास्टर क्षमा के सागर बच्चों को दूर बैठने वाले, मधुबन में नीचे बैठने वाले और बापदादा के सामने बैठे हुए सर्व बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

इण्टरनेशनल मीटिंग ग्रुप से मुलाकात

एक-एक रत्न बहुत-बहुत वैल्युबुल है। बापदादा सदा एक-एक रत्न के विशेषताओं की माला जपते हैं। विशेषतायें हैं तब विशेष आत्मायें गाई हुई हैं। सिर्फ उस विशेषताओं को सदा कार्य में लगाते रहो। बापदादा हर एक के विशेषताओं की माला दोहराते रहते हैं और यही गीत गाते – वाह मेरे विशेष रत्न वाह! इसीलिए कहा ना कि बापदादा सदा बच्चों की याद में रहते हैं। बच्चे, महान हैं और अपनी महानता से विश्व को महान बनाने वाले हैं। कितनी महिमा है? जैसे बच्चे बाप की महिमा करते हैं वैसे बाप भी हर बच्चे

की महिमा करते हैं। रूहानी नशा रहता है ना? सदा अपने को निमित्त, विश्व की स्टेज पर हीरो पार्ट बजाने वाले हीरो एक्टर समझकर चलो। सभी हीरो हैं? बापदादा तो हर एक बच्चे से सारे दिन में अनेक बार मिलता रहता है। मिलता है ना! हर एक का एक्ट देख खुश होते रहते हैं। अच्छा पार्ट बजाने वाले हैं ना! तो बापदादा भी सदा बहुत अच्छा, बहुत अच्छा – यही गीत गाते रहते हैं। बहुत अच्छे हैं ना। अच्छे हैं और सदा अच्छे रहेंगे। गैरन्टी हैं ना, अच्छे रहने वाले ही हैं। रहेंगे, यह पूछने का नहीं है। क्वेश्चन है क्या? अच्छे रहेंगे, पूछें? नहीं। रहना है, रहेंगे। अच्छा – बहुत अच्छा संगठन है।

अच्छा – ओमशान्ति।

समझा – समय की पुकार
क्या है? दाता बनो। एक
अक्षर याद रखना। कोई भी
बात हो जाए “दाता”
शब्द सदा याद रखना।
इच्छा-मात्रम्-अविद्या। न
सूक्ष्म लेने की इच्छा, न
स्थूल लेने की इच्छा।
दाता का अर्थ ही है
इच्छा-मात्रम्-अविद्या।